Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम पवन की पहली थपकी

- सुनील शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम पवन की पहली थपकी

(हिन्दी कविता संग्रह)

सुनील शर्मा

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc. No. 613 (D)
Dated 23-9-09

प्रकाशक
श्री राम ललिति प्रकाशन
जम्मू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Dr. R. L. Shant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम पवन की पहली थपकी

(हिंन्दी कविता संग्रह)

कापी राइट : लेखक

प्रथम संस्करण : 2004

प्रथम प्रतियां : 500

प्रकाशक : रामललिति प्रकाशन
201/3 छन्नी हिम्मत, जम्मू।

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्ज, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।
01923–220243, 222871

मूल्य : 150 रुपये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो शब्द

'प्रेम पवन की पहली थपकी' हिन्दी कविता के क्षेत्र में मेरा प्रथम कदम है। इक दस्तक, इक हल्की सी खटखटाहट ! नॉक, नॉक!

नये नये विचार ज़ब मेरे हृदय को छूते हुए, मेरे मस्तिष्क में हलचल मचाते हुए, एक साथ कई तार बजाते हुए, कभी हँसाते, कभी रुलाते और कभी–कभी एक चुप्पी ओढ़े, मूक स्वरों से मेरे हाथों में एक कलम थमा देते हैं, तब कोरे पन्नों पर उतरे शब्द एक कविता का रूप ले लेते हैं क्योंकि आज कविता केवल प्राइमरी पेशैन्स की कविता नहीं रही, कई परत गहरी हुई है। कविता अति बोधिक न होकर सहज बोधगम्य हो तो उत्तम है, लेखन और चिन्तन कवि दृष्टिविहीन नहीं। विचारशीलता और आधुनिक संवेदनशीलता एक ही चक्की के दो पाट हैं और एक दूसरे के पूरक हैं अपरिहार्य व अनिवार्य हिस्से हैं। एक चिंतक की दृष्टि से ओर जो चिंतक नहीं वह कवि नहीं हो सकता। कवि की यह भरपूर इच्छा होती है कि कविता में कच्चा उतावलापन न हो व उसकी कविताएं सहज रूप में प्रौढ़ विवेक और अनुशासन को निभाएं। यह सब कविता की संतुलित गति, चिंतन, भाषा और कथ्य पर पूर्णतया निर्भर है। कविता शिल्प की मध्यस्थता को न्यूनतम रखते हुए हमारे जीवन के मार्मिक और गहरे पक्षों से साक्षात्कार कराती है। नये कवि नये दृष्टिपथ का निर्माण न करें तो नवीनता नवीन नहीं रहती पुरानी लगती है या हो जाती है लेकिन नवीनता का अर्थ यह कतई नहीं कि लेखक यथार्थ से कटा हो और नकली प्रगतिशील साहित्य रचे। लेखक की रचनाएं आशावाद भरी होनी चाहिएं। जुझारू लेखन से जीवन को बोलने दिया जाए, अंतर विरोधों को उभारा जाए क्योंकि लेखक अकेला नहीं लड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहा होता है। पाठक भी जुझारू लेखन से लड़ता है। कविता कालयात्री है, मानवीय चेतना की दिशा और दृष्टि देने वाली कविता है। कवि धर्म समाज से कटा होना नहीं, परंतु चालू विषयों में सामाजिक, राजनैतिक, सामयिक परिस्थितियों के नारे लगा लेना भी कतई नहीं।

मैंने जब–जब कविता को किसी तर्क के पीछे चलाने की कोशिश की है कविता कविता न रह कर एक तर्क बन गई है और जब–जब अनायास तर्क कविता में खो जाता है कविता अंकुरित हो उठी है। मेरी कई कविताएं मुझे वो पल वो क्षण प्रदान कर जाती हैं और मैं वो सब जी लेता हूँ जो वास्तविकता में शायद अपरिहार्य है। मेरी कविता मुझे बिंदू से सागर बना देती है कई बार तो मुझे लगता है कि अगर मैं कवि नहीं होता तो क्या जीना संभव था।

अपसंस्कृति, मृतसंस्कृति, मूल्यों का पतन, कामुक विचारों और दोषों से घुलीमिली, अत्याधुनिक बजबजाती अश्लीलता सभ्यता को उस गली की ओर धकेल रही है जो अंधी है, बंद है। इस बंद अंधी गली के लेखक को अपनी रचनाओं के माध्यम से खोलना होगा और मेरी कविताएं अगर एक जलती दियासिलाई का ही काम करे तो मैं अपना जीवन सार्थक समझूँगा।

सांस्कृतिक संकट के कारण उपभोक्ता संस्कृति का जन्म हुआ है, भूमण्डलीकरण की घातक चपेट में जीवन शैली व चेतना विघटित हो गई है। नई मान्यताएं उत्पन्न हुई हैं, समीकरण बदले हैं ऐसे में एक गरीब उपभोक्ता की क्या दुर्दशा होगी।

कविता मुझे वो सब सुख प्रदान करती है जिनका अभाव जीवन में कटुता भरता चला आया है। कई–कई कविताओं का स्वरूप और स्वभाव मन में चुपके–चुपके प्रेम के कई फूल खिला जाता है।

आशा है पाठक वर्ग मेरी कविताओं को सराहते हुए मुझे आगे भी भविष्य में लिखने के लिए प्रोत्साहित करेंगें और मेरे द्वारा हुई त्रुटियों को ठीक करने के लिए अपने सुझाव भेजेंगें।

सुनील शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूची

1. इमली की खट्टी धूप 9
2. स्वतंत्रता दिवस 12
3. तुम 14
4. आँख मिचौली 16
5. मैं जेहलम हूँ 18
6. उपभोक्ता 21
7. सतीत्व पर प्रहार 23
8. परमाणु अक्षर 26
9. वनराज्य के कालचक्र से 28
10. डल झील 31
11. शब्दों से बलात्कार 33
12. यहाँ सब स्वतंत्र है 35
13. उत्तरदायी कौन 37
14. हवा जाने कैसी चली है 39
15. विद्रोही मार्ग 41
16. अतीत लौट रहा है 44

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17.	शांतिकुंज	46
18.	विश्व कोतवाल	49
19.	लकीरें फिर गहराती हुई	51
20.	अभिमन्यू	53
21.	उत्तेजना	55
22.	डायनासोर	57
23.	प्रेम दूत	59
24.	कैसा युद्ध	61
25.	प्रतिकार	62
26.	विश्वशांति	64
27.	भूख हुआ है पेट	65
28.	इक सूखे दरिया-सा बहता	67
29.	मेरे भीतर का सन्नाटा	69
30.	चुपके-चुपके	71
31.	जीवन दान	73
32.	तुम न आये	75
33.	तुम जो चली आओ तो	77
34.	लौट के जब तुम आओगे	79
35.	मन मेरा कचनार हो गया	81
36.	मन मरीचिका	83

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

37. प्रेम पवन की पहली थपकी	84
38. देवदारों के तले	87
39. इस देश को उज्जवल कर देंगे	89
40. मुझको प्यार हुआ	91
41. यौवन की जेठ दोपहरी में	93
42. मेरे दिल में	95
43. मेरे ख्वाब में	97
44. कैसा ये बंधन है	99
45. प्यार की बगिया	101
46. युवाशक्ति	103
47. सम्बोधन	105
48. बेनाम	107
49. कहकहा	109
50. लावा	111

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इमली की खट्टी धूप

⊙

इमली की खट्टी धूप लिए
अम्बुआ की मीठी छांव लिए
सुगंध भरी तेरी पाती
आती है पूरा गाँव लिए।

ये महानगर है भीड़ भरा
चप्पा चप्पा है नीड़ भरा
है धुआं धुआं मेरा जीवन
विरही मन मेरा पीड़ भरा
है कठिन यहाँ पल–पल सहना
तुम पत्र मुझे लिखती रहना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो भौर का पंछी संग उड़ना
वो दूब का ओस के रंग रंगना
वो पवन का खिल खिल के हंसना
वो सांझ का मलहम सा मलना।

ये स्मरण भी कितना सुरभित है
हुआ रोम रोम मेरा पुलकित है
ये महानगर तो दूषित है
प्रकृति रुष्ट, विस्थापित है।

संजीवनी भेज स्वच्छता की
श्वासों का कठिन हुआ बहना
तुम पत्र मुझे लिखती रहना।

पनघट पर तुम जाती होगी
इक परम्परा पहचान लिए
अल्हड़ नदिया बहती होगी
सुंदर उद्गम मैदान लिए।

वो द्वारपाल बूढ़ा बरगद
देता होगा अब भी पहरा
ये महानगर है ठूंठ भरा
खारा, उथला, नीरस बिखरा।

पंकिलता, शोर आभूषण हैं
दूषण, संदूषण है पहना
तुम पत्र मुझे लिखती रहना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अब भेज पोटली बेरों की
वो भुनी मकई के भुट्टे
वो टीले की अनछुई बात
वो ताल की डुबकी के किस्से।

ये भूख पेट पर बांधे हुए
ये महानगर बस पीता है
फुटपाथों पर ये सोता है
ये झूठ बेचकर जीता है।

यहाँ पर्यावरण प्रदूषित है
अब भेज गाँव का हर गहना
अब भेज गाँव का हर गहना
तुम पत्र मुझे लिखती रहना।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वतंत्रता दिवस

⊙

स्वतंत्रता का दिवस सबसे पावन
मनाएं कुछ ऐसे शपथ लें निभाएं
पवन शांति की बन के घूमे धरा पर
गगन चूम लें, चूम ले सब दिशाएं।

क्षितिज से भी आगे है अपनी नजरिया
कि पथ को दिखाएंगे बन के बिजुरिया
कि सींचे धरा को हम बन के बदरिया
कि हर राधिका को मिले इक संवरिया
बनें लाल आभा हम ऐसी सुबह की
कि भक्षक अंधेरे न फिर लौट पाएं।
पवन शांति..............................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सिसकते हुए सारे जेहलम के चप्पू
वो सब देवदारों चिनारों के आंसू
वो धुंधवाते बादल से सपने वो हर सू
वो हिंसा, हवस में घिरे कोरे गेसू।

भरें घाव संजीवनी से सभी के
तरु बन के सब ठूंठ फिर मुस्कुराएं।
पवन शांति..............................।

न विस्तार फैले विषैले चलन का
न उन्माद ही पोर घेरे वतन का
बचे शस्त्र कोई न जग में हनन का
यह चिंतन करो सब समय है मंथन का
यहाँ चाँदनी चाँद जी भर उंड़ेले
यहाँ श्वेत पंछी सदा गीत गाएं।
पवन शांति...........................।

चलो आगे लिखें कुछ ऐसे कहानी
कि सीमाएं लांघे न सरयू का पानी
न डल झील की अब लुटे फिर जवानी
रंगे न लहू से चुनर कोई धानी
छवि अपनी धूमिल कभी हो न जग में
कदम प्रेम के न कभी डगमगाए।
पवन शांति...........................।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम

⊙

झीनें हो जायें जब विश्वास
चुराकर अंगों की गदराहट
बारूदी सोच जब उड़ जाए
भीगे केशों में उलझे चाँद
जब डूब जाएं
चिर अमावस में
कसमसी मन की जब गाँव की
तलैया हो जाए
पतंग जब
निकल आए माया जाल से
उम्र जब घिस जाए
पथरीली डगर पर
मिचमिचाते आंखें
स्वप्न जब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुंआ हो जायें
धुंधवाती
भावनाएं
जब ठंडी राख हो जायें
तुम आ जाना
चुपके से
मटमैली, सिकुड़ी, झुर्राई,
आकृति के साथ।
मैं तुम्हें फिर संवारूंगा
मैं तुम्हें फिर उड़ाऊंगा आकाश में
इक प्लास्टिक की पतंग की तरह
तुम फिर चले जाना मेरे हाथों में
कटी डोर थमाकर.......।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँख मिचौली

⊙

मैं यहाँ खड़ा हूँ
एक शून्य वहीं उगा है कहीं।
मेरे पैरों में
बारूदी सुरंगों सा
घुंघरू की तरह बजता है
मेरे संग संग लुढ़कता है
चलता है गहन अंधकार का
काफिला लिए
कंधे उचकाता।
मैं यहाँ तैनात हूँ
एक शून्य वहीं उगा है कहीं।
मैं कुचल देता हूँ शून्य
और गढ़ देता हूँ एक पथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो लक्ष्य हो जाता है
चिन्ह निर्मित हो जाते हैं गणना के,
जो संग्रहित है
जन जन के
मत के
जनपद पर
विद्रोह के पाँव ढूँढ़ते हैं ज़मीन
यहाँ मैं खड़ा हूँ
यहाँ हर आँखमिचौली
के बाद
शून्य में विचरते
शून्य, शून्य
निरंतर कम हो रहे
शून्य की ओर
हाशिए तक आते आते
शून्य हो जायेंगें
और मैं गिनूँगा
उल्टी गिनती
शून्य, शून्य करके

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं जेहलम हूँ

⊙

मैं जेहलम हूँ
मैं बहता रहा निरंतर
बहे मेरे साथ दशक
किन्तु यह दशक जो जिया मैंने
बहे शव अनगिन
अधखिले, असंख्य, उथले, गहरे
प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष !
अनेक गंदले साडांस
रासायनिक, जैविक
अभियुक्त तथाकथित ?
अपने में समाए
बहा
मैलकुचैला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
साँस रोक कर
लालसुर्ख
लहूलुहान
साक्षी है
मौन
नभ, धरा।
मैं ढोता रहा
अपनी पीठ पर
अनचाहे
इक परों को ढूंढ़ते, फड़फड़ाते, परकटे
टिड्डी दल को
जो
जाने
अनजाने
उजाड़ते रहे
मेरे
उद्गम मैदान
और मेरी एड़िया
दौड़ाती रही मुझे
और मैं चुपचाप, स्तब्ध, हक्का बक्का
दौड़ता रहा
सरपट भागता रहा।
नाक, कान, आँखें बंद किए हुए।
सकारात्मक धारा, विचारधारा
सर पटक कर, पटक पटक कर
ढूंढ़ती रही
मुझ में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरा, अपना
अस्तित्व
पर मैं लहूलुहान बहता, लथपथ दशक ढोता
शून्य में विचरता रहा
मैं अब भी बह रहा हूँ निरंतर
स्वच्छ जीवन स्त्रोतों की चाह में
अब डेढ़ दशक पश्चात् मेरे कानों में
नवजात शिशु स्त्रोत फुसफुसाने लगे हैं
मेरी उंगलियां अपने आप
नाक, कान, आँखों से
हटने लगी हैं।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपभोक्ता

⊙

धूप जब बिकेगी
आंगन आंगन
चांदनी जब
अंजुरी भर भर
खरीदी बेची जायेगी
पवन झकोरा
जब मुट्ठियों में नोट कसे
राशन की दुकान पर
एक लम्बी कतार में
गैस सिलंडर में बंद बिकेगा
तुम्हारा स्वास्थ्य
ओ होलसेल डीलर
मेरे आंगन में
खुली खिड़की बतायेगी
कि भीतर पारा थर्मामीटर का एबनार्मल है
तुम बदल गए हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे विश्वास हो जायेगा
तुम्हारी गीदड़ भभकियाँ
हो जायेंगी दहाड़, चिंघाड़
पागल हाथियों के झुण्डों के साथ रहते
तुम्हारा क्या है
तुम रेत भी हो पांव भी 'बीच' भी
फिसलते रहोगे
और मैं इक मील पत्थर सा जड़वत,
गरीब उपभोक्ता
न धूप खरीद पाऊंगा
न चांदनी।
तुम
इक बहाव हो, समय के साथ बहोगे, उछलोगे
पवन झकोरा भी
तुम्हारी आगोश में गर्माता
नोट से नोटों का बंडल हो जाएगा
और मैं नोट से रेज़गारी,
मुट्ठियों में,
कसी मुट्ठियों,
में
फिसलता
रेत हो जाऊंगा।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सतीत्व पर प्रहार

⊙

सतीत्व पर प्रहार
दृष्टि नोचती बोटी बोटी
सभ्यता की न खरी कसौटी
कैसा बुरा हाल है
कमाल है भाई, कमाल है
सतीत्व, अस्मिता,
पान तम्बाकू का ?
जब चाहे चबाया ?
और थूक दिया ?
दिन – दिहाड़े
लूटते लुटेरे, कोहिनूर के हीरे,
अमूल्य रत्न
मानस गंध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदलती रूप

चित्त भयभीत

देह आतंकित

सामाजिक हार,

मापक खंडित

असहाय निरंतर

कसती निर्ममता

मूक दर्शक मानवता

कैसा बुरा हाल है

कमाल है भाई, कमाल है।

घटना

सुर्खियां कुछ दिन,

फिर दूसरे, तीसरे चौथे पन्नें

की छूट जाने वाली चंद पंक्तियाँ,

नारी दिवस पर

मात्र भाषण

कानून की मुट्ठियों में

रेत सी फिसलन

संभावनाएं

संवेदनशीलता,

सहानुभूति,

व्याप्त रोष

केवल शब्द नपुंसकता के

कुर्सियों से मात्र बदलना कुर्सियां

हर पाँच वर्ष बाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिवर्तन ?

विलासता ?

नपुंसक समाज

जांघे बिछाए

निमंत्रण दे रहा

अनचाहे

संभोग को

सादर निष्क्रियता के साथ

जघन्य अपराध

के लिए खुदेगा काला, अंधा

कुंआ क्या यूंही ? अपने आप ?

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परमाणु अक्षर

⊙

पन्ने उलटे सुधियो के
स्मृतियों के
शब्द शब्द कराह उठा
अनगिनत घाव रिसने लगे
निस्तब्ध रात
आधी रात
रुकी है चौखट पर,
निद्रा की!
फिर किसी ने
जादू की छड़ी
घुमाई है
श्वेत पंछी लौटने लगे है नीड़ों में !
लथपथ बीता पहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो गया इतिहास
भूगोल ज्यों का त्यों हैं
सीमा रेखा लक्ष्मण रेखा
झाड़ पोंछ, मंझकर
फिर
अग्नि कुंड हो जायेगी
इतिहास
के पन्नों पर
फिर लिखे
जायेंगें
अक्षर,
स्वर्ण,
भगवे,
लाल सुर्ख !
या परमाणु अक्षर
फिर कोई जादुई छड़ी घुमाई जाएगी !
इतिहास बदलता है
फिर बदलेगा
पर क्या
भूगोल रह पाएगा भूगोल ?
क्या
भूगोल रह पाएगा भूगोल ?

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वनराज्य के कालचक्र से

⊙

कालचक्र के घेरों में
अंकित हैं पदचिन्ह
पथभ्रष्ट सियारों के
जलरंग ने बदल दिया
जिनका रंग रूप
भटक गया उरअंतर जलधार से
परिधान बदल कर
रंग पोत कर
सियार हो गए
मात्य वन राज्य के
मृग चिंतित है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वन पंचायत के चुने
रंग पुते सियार
अपनी ओर न कर लें
सभी भक्षक पंच
भेड़िए, चीते, सूअर
और मृग बन जायें इक इक क़रके इनका ग्रास
समस्त वन पर हो जाए इनका राज
लोकतंत्र में
मृग
चाहते हैं अपनी सरकार
मत केवल रंग पुते सियारों का नहीं
ना ही केवल मृगों का
चुनाव में मत का प्रयोग
गाय, बकरी, शेर, आस्तीनी सांप सब करेंगें
हाँ अगर नहीं कर पायेंगें तो
वो जो
इन रंग पुते सियारों
की राजनीति की बलि चढ़ गये
अति आवश्यक है कि
उतरे इन रंग पुते सियारों का रंग
शीघ्र अति शीघ्र
और मत के प्रयोग की प्रक्रिया में
चुनाव में
सम्मिलित हो समस्त वन्यप्राणी
वन में फिर हो जाए मंगल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और जलरंग में फिर पुत जाए कुछ सियार
फिर काल चक्र के घेरों में
अंकित हो पदचिन्ह
कुछ पथभ्रष्ट सियारों के ?

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डल झील

⊙

कश्मीर की
डल झील में
उगी घास
जुटी मशीनें सफाई में
शिकारे, चप्पू,
मांझी
चिंतित
अस्तित्व
डल झील का खतरे में
खतरे में जीविका
हाऊसबोट
मशीनें उलझी
संहारक पनिहा बेलों में
मशीन चालकों पर आरोप अनियमितताओं के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ जल मुर्गियों ने छेड़ा आंदोलन
कुछ बगुले आमरण अनशन पर
पानी चुप्पी ओढ़े
लहर लहर शांत
पर्यावरणविद् प्रतीक्षा में
चूल्हा जलने की
जो बुझ गया है
कुछ शिकारे हिले हैं
कुछ चप्पू चले हैं
लगता है घास घटने लगी है
लगता है घास छँटने लगी है

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्दों से बलात्कार

⊙

शब्दों के नित्त हो रहे बलात्कार
अर्थों का समाज
न्याय मांगता बूढ़ा हो गया
रोटियां सेक वचनों के चूल्हों पर
आधी सदी से
कल्लू, मल्लू पीढ़ी दर पीढ़ी
पहलवान हो गये
अखाड़ा अत्याधुनिक दांव पेच सिखाता
विश्व प्रसिद्ध हो गया
मल्लू प्रथम श्रेणी का पहलवान हो गया
लल्लू जन जन का मसीहा हो गया
उधर पहलवान रोज़ दांव पेच बदलते जा रहे हैं
इधर शब्द ज्यों के त्यों मसले जा रहे हैं
शब्द कहीं शिशु का खिलौना
कहीं बाल का हस्तमैथुन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कहीं तरुण का संभोग

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्दों का शोषण जारी है
शब्दों की अपनी एक बढ़ती जनसंख्या
अर्थों से कहीं दूर, परे पनप गई है

....

अब सेज फिर सजने लगी है
अपहरण फिर हो जायेगा
शब्द फिर गुमराह किए जायेंगे
अर्थ ढूंढ़ते ढूंढ़ते
बलात्कार सहते
बूढ़े हो जायेंगें
जनसंख्या
शब्दों की अवैध जनसंख्या
बढ़ती ही जायेगी
वो फिर रोटियां सेक
वचनों के चूल्हों पर
फिर आधी सदी तक
या कुछ एक दशक
या फिर पाँच वर्ष तक
अम्मू से फुम्मनू
पहलवान हो जायेंगे

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहाँ सब स्वतंत्र है

⊙

नित्त गर्भ धारण करता आतंक
बलात्कार करते साँड
नपुंसक समाज
सीमाएं लाँघती पशुता
कुंडली मार कर बैठी विवशताएं
इच्छाओं पर
घुटने टेके बलि चढ़ती मानवता
नरसंहार करते नरभक्षी जंगली सूअर
मानव के विरुद्ध षड्यंत्र है
यहाँ सब स्वतंत्र है
मुकुट हथियाने के नित्तनवीन हथकंडे
चलते फिरते बम
हम चिरकाल से चुप्पी साधे
मौन धारण किए मेमने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो नरभक्षी सूअर
अधिपत्य जमाने को आतुर
निगलते मानव जाति धीरे–धीरे
हम जपते अहिंसा का मूलमंत्र है
यहाँ सब स्वतंत्र है।
खूनी होली खेलते दानव
मौत करती रोज़ तांडव
भाषण देते मगरमच्छ
प्रतिपल असहाय मानव
युक्ति का खोये यंत्र है
यहाँ सब स्वतंत्र है
गुत्थी उलझाता हाकिम
मोहर मोहर लाश लाश
मनुष्य खो गया पहचान
नरकंकाल का परिचय/डी. एन. ए. टैस्ट
करवाता सम्राट
वचन भंग करता नगर कोतवाल
आज फिर राजा की ताशपोशी है
यह कैसा लोकतंत्र है
यहाँ सब स्वतंत्र है।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तरदायी कौन

⊙

धन हो या विषय सुख
छीनना जीवन शैली का
एक मात्र
सरल साधन बन गया है
सरल धन की चाहत ने
अविश्वसनीय गिरावट
प्रदान की है साधनों को
मूल्यों का पतन
इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करने से
कहीं अधिक
तीव्रता से हो रहा है
और कामुकता स्थिर है
और यह गिरावट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उत्तेजित कर रही है
कामुक विचार और दोष
दुर्लभ हो गई है
सत्यता और निष्कपटता
विषय सुख की ओर अग्रसर है यह समाज
मूल्य अर्थहीन हैं
और विषय सुख बन गया है
जीवन का विषय गीत, जीवन गीत
तो फिर उत्तरदायी कौन
क्या हमारे मापदण्ड ?
क्या हमारी सीमाएं ?
क्या हमारे मूल्य ?
या फिर स्वप्निल सतह को छूने को आतुर
हम या हमारा आडम्बर।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवा जाने कैसी चली है

⊙

चिनारों में सुलगन भरी है
झुलसने लगी हर कली है
हवा जाने कैसी चली है

लबालब भरा सारा जेहलम
हुई सारी धरती भी लथपथ
लहू से ये वादी सनी है
हवा जाने कैसी चली है

है रुत अबके बारूदी आई
कि विस्फोट करते सुमन भी
सुगंधी भी विष से भरी है
हवा जाने कैसी चली है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये अपना शहर अजनबी है
कि पहचान अब दुश्मनी है
कहां खो गई दोस्ती है
हवा जाने कैसी चली है

ये चेहरे तो बस नाम के हैं
कि पहचान अब हादसे हैं
यहां जीना तो खुदकशी है
हवा जाने कैसी चली है।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्रोही मार्ग

⊙

मेरा भाग्य कई मील कंकर, पत्थर
मैं कोई पंथ हूँ पथरीला
तुम तो हो एक राजपथ जैसे
तुम क्यों मुझ से होकर गुज़रते हो
क्या कोई ऋण है जो चुकाना है तुम्हें ?
या यूहीं कंकरों पत्थरों से उलझते हो
या मेरे वक्ष पर प्रहार कर अपनी आकांक्षा
मेरी नुकीली तेज़ धार
आकाँक्षाओं से
भिड़ाकर
अपनी समतल पीड़ा शांत करते हो
मैं प्रतिदिन
भौर से ही जागकर
उनींदी पलकों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निहारता हूँ तुम्हें
और तुम मखमली रेशम सी
मुस्कान लिए
अपनी आसक्ति मेरे प्रति जताकर
मुझे भावविभोर करते हो
करते हो सराबोर
मेरे अंतर मन में जिज्ञासा जगाकर
झिंझोड़कर
इक अधूरापन करने को समाप्त
इक पूर्ण विकसित प्रवाह में बहाकर
ले जाने की चेष्टा करते हो
इक लक्ष्य निर्धारित करते हो
इक विद्रोही प्रवाह को शांत कर
जिससे लथपथ हुए
कई कदम, कई विचार कई अग्रगण्य
कई पीढ़ियां, कई दशक
इक अनुच्छेद लांघकर
इक संकरे, पथरीले मार्ग को
राजपथ बनाकर
इक विद्रोही प्रवाह को मुख्यधारा में
लाकर
कुछ एक पत्थरों को, नुकीले पत्थरों को
घिसकर, घिसाकर।
समय निश्चित है
सभी अनिश्चितताएं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अनिश्चित

मैं मेरा भाग्य जानता हूँ
पर कंकर पत्थर स्वाभाविक है
चुभेंगे राजपथ बनने तक ?

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतीत लौट रहा है

⊙

जिंदगी बन गई है नुमाइश
और लोग तरह तरह के प्रदर्शक
हर तरफ लगे हैं पोस्टर
अश्लीलता की हद को पार करते हुए
और इन्सान हो गया है ज्यादा अश्लील इन पोस्टरों से
'सभ्य' शब्द
काट दिया गया है
जिंदगी के शब्दकोश से
और 'सभ्य' की जगह
चिपका दिया गया है
शब्द आधुनिक 'माडर्न'
जिसकी आड़ में
फैशन का लेबल लगाकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगा दी गई है नुमाइश जिस्मों की
अंग प्रदर्शन बन गया है आर्ट 'माडर्न ऐज' का
'आधुनिक युग' का
एक या दो कपड़ों में पारदर्शी कपड़ों में,
घूमती हैं, फैशन चैनलों में
युवतियां
तो फिर क्या फर्क है /रहा/रहेगा
हममें और सदियों पुराने उस निर्वस्त्र
प्रिमटिव मनुष्य में / आदि मानव में
जिसे हमने नाम दिया असभ्य
क्या हम मुड़ रहे हैं पीछे की ओर
या अतीत लौट रहा है।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शांतिकुंज

⊙

काला जंगल
और गहरा गया है
श्वेत पक्षी कुनमुनाता है
मूक स्वरों से
शांति प्रस्ताव
पूनम के चाँद का
शरद रातों में
पकी चाँदनी ओढ़े
अशांत मेघों के कोलाहल में
छटपटाता है
श्वेत संगमरमरी चादर ओढ़ाने को आतुर
धुंध से घिरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कालिख पुते जंगल पर।
पवन झकोरा
घुटी चीख लिये
साँय से निकल जाता है
बहरे कानों में अहिंसा की ध्वनि भरने
पीकर बारूदी हवा, ओले खाकर
काला जंगल हो गया ठूँठ
शांति की दृष्टि
वहाँ तक जाती है
यहाँ आकाश
धरती से मिलता है
लथपथ क्षितिज लौटा देता है लहूलुहान
जीवन
फिर भी चलता है
नपानपाया
सुगंध खोजने
दुर्गंध ओढ़कर
कालिख पुते
काले जंगल का
इक मेघ किलकारता है
क्या बरसेगा, कालिख धोएगा ?
क्या अंकुर फूटेंगें ?
लगता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अंकुरित होगा
फिर से शांति कुंज
अंकुरित होगा
फिर से शांतिकुंज

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्व कोतवाल

(एक खुला पत्र)

⊙

आधि शति पूर्व तक
ब्रह्मांड
धीरे–धीरे
चलता, तैरता था
एक ब्लैक एंज व्हाईट मोशन पिक्चर की तरह शायद
वास्तव में, यह सीन, यह दृश्य
है फटना
अत्याधिक शक्ति का
एक पल में
सूर्य का अणु अणु जुड़ा है
जुड़ता है
परमाणु शक्ति के सकारात्मक उपयोग में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

[illegible] [illegible] प्रयोग करके
अपना जीवन देकर
पाया तीन वैज्ञानिकों ने भौतिकी
नोबेल
तो ऐसे व्यक्तियों के लिए
क्या पारितोषिक है
विश्व कोतवाल
जो लगे हैं अणु अणु तोड़ने
इन परमाणु शक्तियों के दुरुपयोग में
परमाणु मेघों के केन्द्र बिन्दु से/चकाचौंध से

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लकीरें फिर गहराती हुई

⊙

लादेन की इच्छा शक्ति
वर्ल्ड ट्रेड सैन्टर
से भिड़ी
पूरा विश्व आतंकवाद
के विरुद्ध
अंकल सैम के साथ
हिरोशिमा और नागासाकी
की भटकती आत्माएं भी ?
कालूचक्क, चरारे–शरीफ, बामयान बुद्ध की
ध्वंसता के अधिनायक, निदेशक भी
फासी वादी क्रूरता के
नायकों की
तियानमिन स्कवेयर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की तगमें वाली सभी
छातियां भी
कश्मीर में गरजते परमाणु मेघ भी
चेरनोबिल कंपकंपाता/मौन ?
थरथराती गाज़ा पट्टी
रैडक्रास और मानवाधिकार आयोग
युद्धस्तर पर
तैयार
निपटने,
आतंकवाद ?
बर्लिन वाल फिर ऊंची हुई इक
अलग दिशा में
महारानी ब्रिटेन और अमरीकी सेनेट
खोलेंगे पुनः
कोषद्वार
पुनर्निर्माण हेतू
और चंद बिलयन डालर
इक बफादार ?
भेड़िए के नाम गिरगिट के नाम
लकीरें गहराती हुई
लकीरें फिर गहराती हुई।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिमन्यू

⊙

तुम अभिमन्यू हो
आज के अभिमन्यू
अकेले निहत्थे
पर कौरव अनगिनत
चक्रव्यूह के रचयिता
द्रोणाचार्य और कौरव
आधुनिक अस्त्रों, शस्त्रों से लैस
और तुम निहत्थे
आज तो तुम्हारे पास रथ ही नहीं
तो रथ का टूटा पहिया कहाँ से होगा ?
आज तो तुम्हें निर्विरोध मरना होगा
कलयुग में
तुम अकेले हो बिल्कुल अकेले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकेला हूँ

तुम ठीक कहते हो
पर मैं अकेला क्यों हूँ
तुम क्यों नहीं देते मेरा साथ
आज के पाण्डव तुम ही तो हो
क्यों देखते हो दर्शकों की तरह
जब तक तुम दर्शक से मेरा अंग नहीं बनते
अभिमन्यू मरता रहेगा
हर चौक, चौराहे, नुक्कड़
और हर चक्रव्यूह, हर महाभारत में
और सत्य का वध होता रहेगा।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तेजना

⊙

हर सुबह उठकर
मैं यहीं सोचता हूँ
कि कहीं आज फिर कोई मेरे
लहलहाते खेत को उजाड़ न दे
कहीं आज
फिर कोई
रौन्द न डाले वो कलियाँ
जिन्हें अभी
खिलना है
ओढ़नी है धानी चुनर
कहीं आज फिर कोई
ज़हरीला पेड़
हर न ले सारी हरिता इस खेत की
फिर कोई जंगली सूअर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तहस नहस न कर दे वाटिका।
सोचता हूँ
क्यों रहूँ निश्चित
पनपने दूँ अपने ही खेत में
फसल के दुश्मनों को
क्यों नहीं निर्मूल करूं उन चूहों, जंगली सूअरों को
उनके बिलों, गुफाओं सहित
क्यों बनूं नपुंसक
क्यों सोचूं अकेले खेतीहर मज़दूर का आक्रोश
क्या कर सकता है
क्यों सोचूं कि इस खेत का मालिक
शांति प्रिय है
शांतिप्रियता क्या नपुंसकता कि निशानी है ?
सोचता हूँ दिखला दूँ कदापि नहीं
पर शांति प्रिय हूँ।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डायनासोर

⊙

ओ स्टीवन स्पीलबर्ग
सचमुच
तुमने
परदे पर डायनासोर दिखाकर
एक वन्यप्राणी विलुप्त
हज़ारों वर्ष पूर्व
विश्व भर को कर दिया चकित
जो सक्षम थे निगलने में पूरी मानवजाति
सचमुच तुमने किया एक
अत्यंत
अद्‌भुत सराहनीय कार्य
परन्तु
पूरे विश्व में
अभी भी जीवित है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कई नरभक्षी
कई डायनासोर जैसे
जो स्वेच्छा
प्रकट हो जाते हैं
अपनी लपलपाती जीभा निकाले
अपने पैने दांतों से चबाने
निगलने समूची मानव जाति
और फिर
अदृश्य हो जाते हैं
'सभ्य' समाज में
ओ स्टीवन स्पीलबर्ग
क्या तुम दिखा सकते हो
ये नरभक्षी डायनासोर से
जो समाज में से
निकलते हैं
और समाज में
ही लुप्त हो जाते हैं।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम दूत

⊙

सूर्य जब जलकर
राख हो जायेगा
चाँद बुझ जायेगा जब
धरा जब डूब जायेगी
अँधकार में
तुम
मुझे फिर
जन्म देना
इस धरती पर
एक नए सूर्य के साथ
एक बेदाग़ चाँद चक्कर काटता
यहाँ
सिर्फ एक ईश्वर हो
एक धर्म मानवता का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परमाणु रहित
लकीरों, सीमाओं
द्वेष–भाव ईर्ष्या
झगड़ों, दंगे फसादों से अनजान
ईश्वर प्रेम में लीन
इश्क, प्यार
लैला मजनूं
हीर रांझा
रोम्यो जूलियट
और सोहनी महिवाल के संग
तुम मुझे फिर जन्म देना
इस धरती पर प्रेम दूत बनाकर।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसा युद्ध

⊙

घिर आया है कैसा युद्ध
धमनी धमनी रक्त विरुद्ध

मंदिर मस्जिद न टूटें
टूटे न बमयाना बुद्ध

फिर न कोई रेल जले
फिर न भड़के भीड़ क्रुद्ध

कब हैं राम रहीम लड़े
अनुयायी क्यों करते युद्ध

अन्धे युग के अन्धे लोग
अन्धी चालें अन्धा युद्ध

मानवता है आतंकित
कंठ जगत का अब है रुद्ध।

□ □ □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिकार

⊙

आर करो या पार करो
अब निर्णायक वार करो

निहनन का अब लो प्रतिकार
अब न पुनर्विचार करो

अत्याचार मिटाओ पर
तुम न अत्याचार करो

घाव भरे न संयम से
रोगों का उपचार करो

जनवध का प्रति उत्तर दो
शब्दों के न वार करो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मात्र विकल्प बचा है युद्ध
व्यर्थ न अभिसार करो

कथनी को करनी कर दो
अंतिम गूढ़ प्रहार करो

टूटी सहने की सीमा
अब तो उपसंहार करो।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्वशांति

⊙

आज मानव मूल्यों का हो रहा उपहास है
आदमी का आदमी से उठ गया विश्वास है।

विश्वशांति कामना लेकर दिलों में चल पड़ो
युद्ध अपने आप ही लेता नहीं बनवास है।

अंजुरी सिंचन प्रेम का तृप्त जग तृष्णा करे
विष भरा अपशब्द इक बांटे युगों की प्यास है।

बीता युग आया गया बस खेल खूनी होलियां
अब युगों तक शांति का लिखना नया इतिहास है।

युद्ध से शांति मिली तो क्या मिली सब सोचिए
रक्त की सरिता बहा शांति मिली परिहास है।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूख हुआ है पेट

⊙

दाने दाने के लिए
भूख हुआ है पेट
एड़ी एड़ी जीवन
हो अकाल से पीड़ित जैसे
जीवन बंजर खेत
एड़ी एड़ी जीवन

घाव घाव है सारी काया
खाकर पग पग ठोकर
सिक्का सिक्का पाया मैंने
बोटी बोटी खोकर
जीवन रुक सा गया है जैसे
बिन इंजन के रेल
दाने दाने के लिए.................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुड़िया छूटी कांचे छूटे
छूटा तीर कमान
आँखों ने जो सपने देखे
चढ़े नहीं परवान
पिसा है चक्की के पाटों में
बचपन का हर खेल
दान दाने के लिए................।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक सूखे दरिया - सा बहता

⊙

इक सूखे दरिया सा बहता अर्थहीन मेरा ये जीवन
मंज़िल है न कोई साथी लक्ष्यहीन मेरा ये जीवन
मैं कोई एकाकी पथ हूँ
पंथी है न मीत है कोई
गहन हुए निर्वात अंधेरे
जलता इक न दीप है कोई
शून्य हो गया अंतराल से
शब्दहीन मेरा ये जीवन
मंजिल है न कोई साथी लक्ष्यहीन मेरा ये जीवन
नीरसता है रोम रोम में
टूट गया है इक इक रिश्ता
रौंदा मसला नियति ने यूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे मैं हूँ टूटा पत्ता
रुक रुक कर चलती है सांसें
रक्तहीन मेरा ये जीवन
मंजिल है न कोई साथी लक्ष्यहीन मेरा ये जीवन।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे भीतर का सन्नाटा

⊙

मेरे भीतर का सन्नाटा
तिमिर में भ्रमण करता है
सुखद इक स्पर्श से तेरे
मेरा जीवन संवरता है।

हृदय में जन्म लेती है नई इक प्रेम की कविता
नयन में झिलमिला उठती है इक, मोती भरी सरिता
तेरा आना मेरे जीवन में अनगिन रंग भरता है
सुखद इक...।

हुआ सिंचित सुगंधि से मेरे श्वासों का कोरापन
तपे सब तार सुधियों के लगे पाने हैं शीतल धन
तेरे इन भीत पोरों से मेरे अंग अंग मचलता है
सुखद इक...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधेरी रात दिनचर्या, भरा तम से मेरा भीतर
तुम आये चांद आया है छिटकते चाँदनी भर भर
थका जीवन भी इतराती उमंगों सा उछलता है
सुखद इक...।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुपके-चुपके

⊙

धूप चुपके जिस तरह से पुष्प सहलाती धरा पर
चांदनी जैसे गहनतम को मिटा जाती धरा पर
चुपके चुपके ठीक वैसे प्रेम तुम मुझ से करो न।

स्पर्श जैसे आँच बनकर बर्फ के पत्थर उबाले
गुदगुदाएं करवटें ले यूं अमावस को उजाले
प्रेम बंधन में बंधे पीते हैं जैसे लोग प्याले
चुपके चुपके ठीक वैसे प्रेम तुम मुझ से करो न।

ओस आँचल में समेटे भोर उनींदी सी कोई
साँवली सी मदभरी सी संध्या छलकी सी कोई
गुनगुनी दोपहर गर्माए पवन ठंडी सी कोई
चुपके चुपके ठीक वैसे प्रेम तुम मुझ से करो न।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नींद जब तारे चुराएं रात बैठे रात गुमसुम
धीमे धीमे जिस तरह फिर रात करती बात गुमसुम
रात जैसे एक इक कर बांटती सौगात गुमसुम
चुपके चुपके ठीक वैसे प्रेम तुम मुझ से करो न।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन दान

⊙

प्रेम तुम्हारा पाकर यह वरदान मिला है
चलती फिरती लाश के जीवन दान मिला है।

तुम बिन कुम्हलाये थे मेरे सांझ सवेरे
प्रतिदिन घटते मूल्य सभी वे विश्वासों के
तुम से आज स्थिरता को निर्माण मिला है
चलती फिरती लाश.........................।

जीवन के विपरीत चली थी जीवन धारा
उथल पुथल के मध्य घिरा श्वासों का पारा
तुम आये तो चिंता को श्मशान मिला है।
चलती फिरती लाश..............................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिक्त, विकल, नीरस था अब तक मेरा जीवन
इक फैले आकाश सा नीरव मेरा यौवन
तुम से चिर प्रसन्नता का वरदान मिला है
चलती फिरती लाश को जीवन दान मिला है।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम न आये

⊙

लौट के आये पंछी धूप मुंडेरों से जब उतर गई
तुम न आये और इक संध्या प्रतीक्षा की गुज़र गई

साथ थे तुम तो पलक झपकते दिन चढ़ते ढल जाते थे
रजनी गंधा रातें थी दिन अमलतास बन जाते थे
तुम बिछड़े तो प्रेमसुमन की पत्ती पत्ती बिखर गई
तुम न आये ....।

तेज़ आंधियों के चलने से नीड़ इस दिल का उजड़ा है
आंखों की सीपों से इक इक मोती टूटा बिखरा है
स्वप्न पिरोए थे पलकों में माला सारी बिखर गी
तुम न आये...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब तक आंखें नम हैं मेरी विरह की बरसातों से
टूट के दो दिल बिछड़े अपनी ही नियति के हाथों से
मंजिल कैसे पाते हमसे छूट प्रेम की डगर गई
तुम न आये..।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम जो चली आओ तो

⊙

बारिशों के मौसम में
तुम जो चली आओ तो
जिंदगी संवर जाए
खुश्बुओं से भर जाए।

बादलों के पंख लगा आज उड़ के आ जाओ
सागरों को, पर्वतों को पार कर के आ जाओ
बात मेरी इतनी सी तुम जो मान जाओ तो
जिंदगी संवर जाए
खुश्बुओं से भर जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सावन की बूंद बूंद पग में बांध पायल को
नाचती नचाती है मेरे मनवा पागल को
सावन का गीत कोई तुम भी गुनगुनाओ तो
जिंदगी संवर जाए
खुश्बुओं से भर जाए।

बारिश को भी तेरा इंतज़ार है शायद
मेरी तरह इसको भी तुमसे प्यार है शायद
मेरे लिए आओ या इसके लिए आओ तो
जिंदगी संवर जाए
खुश्बुओं से भर जाए

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लौट के जब तुम आओगे

⊙

भीगे पल संभाले हैं
कुछ परतों में रूमालों की
लौट के जब तुम आओगे हर कतरा कतरा चुन लेना

सपनों में कटती हैं रातें यादों संग दिन ढल जाए
विरह में तब मूक स्वरों से गूंगापन नग़मे गाए
लौट के जब तुम आओगे हर अक्षर अक्षर सुन लेना
भीगे पल संभाले हैं.......................................।

याद में तेरी तड़प–तड़प कर मुरझाए आंगन के फूल
पिछवाड़े की बेरी वाली चिड़िया कलरव गई है भूल
लौट के जब तुम आओगे छत्त के चँदा से सुन लेना
भीगे पल संभाले हैं.......................................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लम्हा लम्हा गुमसुम है दिन रातें सूनी सूनी हैं
बूँद बूँद है चुभन भरी बरसातें सूनी सूनी हैं
लौट के जब तुम आओगे बदरा के मुख से सुन लेना
भीगे पल संभाले हैं.......................................।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन मेरा कचनार हो गया

⊙

इक लड़की की आंखें मुझ से बातें करती मीठी मीठी
दिल ने दिल की बात समझ ली न भेजी न आई चिट्ठी
मुझ को उससे प्यार हो गया मन मेरा कचनार हो गया।

रूप चांदनी देह छरहरी साल सौलहवां अल्हड़पन
नाजुक नाजुक छुईमुई छुईमुई अनछुई पहली भौरकिरण
मदमाती मुस्कान ने उसकी मेरी सारी सुधबुध छीनी
मुझ को उससे प्यार हो गया मन मेरा कचनार हो गया।

पहले प्यार की पहली खुशबू से महका है अंतर मन
कितने ही संकेत शब्द ले आई पहली प्रेम छुअन
नज़रों ने बन कलम सुरमई लिखदी मेरे दिल की तख्ती
मुझ को उससे प्यार हो गया मन मेरा कचनार हो गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब से उससे प्यार हुआ है नाचे दिल की हर धड़कन
डली मधु से भरी वो कोई मधुर हो गया ये जीवन
यौवन छलके अंग अंग से लड़की है या कोई बदरी
मुझको उससे प्यार हो गया मन मेरा कचनार हो गया।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन मरीचिका

⊙

तुम बिछड़े हो सावन रुत्त है
रोम रोम प्रतीक्षारत है
उछले पोखर नदिया सागर
मन मरीचिका पर अतृप्त है

इक वो दिन थे प्रेम नदी की लहर लहर गाती थी गाने
लहरों की नौका में तन का सूरज रुकता था सुस्ताने
आशाओं की चाँद परी भी आती लहरों पर बिछ जाने
लहर लहर अब मूक हुई है जीवन उथला, शुष्क, निसत है
उछले पोखर नदिया सागर.................................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक ये दिन हैं तनमन तड़पे विरह वेदना अंगारों से
नैना बरसे सावन बरसे तृषा शमन ना होने पाये
भीतर बाहर तम ही तम है रूठे मुझ से हैं उजियारे
पल पल अब तो जलन भरे हैं जीवन मेरा पीरग्रस्त है।
उछले पोखर नदिया सागर..................................।

सावन बरसे रुक रुक थम थम तेज कभी यह बरसे कम कम
हौले हौले धीमी सांसें तेज़ कभी चलती हैं मद्धम
देह भीगती, भीगे पल पल, ना भीगा वो जलता मौसम
तुम जब दूर गये थे मुझ से जीवन तब से ये विरक्त है
उछले पोखर नदिया सागर..................................।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम पवन की पहली थपकी

⊙

प्रेम पवन की पहली थपकी
उर अंतर में परिमल भरती
कोंपल फूटी प्रेम सुमन की
काया पलटी कंटक वन की
चित्तवृत्ति परिवर्तित करती
तुम आई मेरे जीवन में।

तीव्र कभी मद्धम चलता था
कुछ धुंधला था कुछ झीना था
तुम बिन सब कुछ एक सुरा था
जीवन जैसे मृगतृष्णा था
बन के तुम कस्तूरी मृगनी
तुम आई मेरे जीवन में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमसे प्रेम असीम मिला है
अनुपम मुझ में रूप ढला है
विमल सलोना सुमन खिला है
मनमोहक इक गीत पला है
तुम वीणा बन सात सुरों की
तुम आई मेरे जीवन में।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवदारों के तले

⊙

इन देवदारों के तले,
आ प्यार कर लें दो घड़ी।
इन लम्हों को इक उम्र दें,
इस प्यार को इक नाम दें।

आ प्यार कर लें टूटकर दुनिया से होकर बेखबर,
इक गीत हम ऐसा बुनें जो प्यार को कर दे अमर,
जब जब जनम हम पायेंगें ये गीत हम दोहरायेंगे,
आ मद भरी इस शाम को हम प्यार का इक जाम दें,
इन लम्हों को...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बादल अभी तक मिल रहे थे देवदारों के गले,
खुद भीगकर हमको भिगोने आ गये हैं मनचले,
ये तन बदन सुलगायेंगे ये प्यास और बढ़ायेंगे,
आ लिपट कर इक दूसरे से प्यार को अँजाम दें

इन लम्हों को इक उम्र दें,
इस प्यार को इक नाम दें।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस देश को उज्ज्वल कर देंगे

⊙

हम प्रेम के अनुपम दीपों से
इस देश को उज्ज्वल कर देंगे,
धरती माँ तेरे चरणों में
खुशियों का अम्बर धर देंगे।

हम अपने देश की खातिर तो अपना सर्वस्व लुटा देंगे,
संकट कितना भी गहरा हो चुटकी में उसे मिटा देंगे,
हम अपने अटल इरादों से गागर में सागर भर देंगे
धरती माँ तेरे चरणों में
खुशियों का अम्बर धर देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न अत्याचार किसी पर हो इक ऐसा लक्ष्य बनायेंगे,
हिंसा निर्मूल करेंगे हम शांति का पथ अपनायेंगे,
हम अपने सपनों का भारत सोने की चिड़िया कर देंगे।
धरती माँ तेरे चरणों में
खुशियों का अम्बर धर देंगे।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझ को प्यार हुआ

⊙

इक शीत लहर सी मन में उठे,
अंग अंग में जो सिहरन भर दे,
ये कौन है जो तड़पाता है,
ये दिल जिससे जुड़ जाता है
क्या प्यार इसी को कहते हैं
गर हाँ तो मुझ को प्यार हुआ।

रातें कटती हैं आंखों में बिस्तर में लेटे–लेटे ही,
तकिए को लेकर बांहों में कभी औंधे मुंह और सीधे कभी,
पलकों के संग झपके पल पल
और तेज़ धड़कता है ये दिल
क्या प्यार इसी को कहते हैं
गर हाँ तो मुझ को प्यार हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूना सूना सा लगता है, ये दिल अब कहीं न लगता है
अपने बेगाने लगते हैं, अनजाना अपना लगता है
अनजाने चेहरे पर अटका मन रहता है भटका भटका

क्या प्यार इसी को कहते हैं
गर हाँ तो मुझ को प्यार हुआ।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यौवन की जेठ दोपहरी में

⊙

यौवन की जेठ दोपहरी में,
तेरे अनुपम प्रेम की छाँव तले,
अभिलाषा है जीवन बीते।

मैं कोई तपता मरुस्थल सा,
तुम छाँव प्रिय हो तरुवर की,
मैं पेड़ हूँ कोई पतझड़ का,
मुस्कान हो तुम गुलमोहर की,
मधुमास को भर कर आँचल में,
उरअंतर को सुरभित करके,
अभिलाषा है जीवन बीते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर ध्वनि मुझे तो लगती है
पदचाप तुम्हारे आने की,
बेखुद मुझको कर देती है
फिर चाह तुम्हें अपनाने की,
दीवानेपन के मौसम में,
भीगे केशों की छाया में,
अभिलाषा है जीवन बीते।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे दिल में

⊙

मेरे दिल में रहती है इक ऐसी लड़की,
जो मिलती तो है पर मिले ख्वाब में ही।

मुझे प्यार उससे, उसे प्यार मुझ से
है जुड़ से गये खुदबखुद तार दिल के,
ये लगता है रिश्ता युगों का है कोई,
मेरे दिल में..........................।

न ख़त लिखके उसको बुलाना पड़े है,
वो रूठे कहाँ जो मनाना पड़े है,
पाकीज़ा मोहब्बत कहाँ होगी ऐसी।
मेरे दिल में..............................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है जिसने दिखाया मुझ ख्वाब ऐसा,
वो ही इसकी ताबीर का जाने रास्ता,
मुझे उससे इक दिन मिलायेगा वो ही।
मेरे दिल में.................................।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे ख्वाब में

⊙

मेरे ख्वाब में बस रही जो परी है,
मुझे लग रहा है यहीं पे कहीं है।

पहाड़ों के झरनों सी वो बह रही है,
वो कलियों में मुस्कान सी खिल रही है,
हवाओं में खुश्बू सी वो उड़ रही है
वो कुदरत के हर रंग में बस रही है
मेरे ख्वाब में..............................।

ज़मीं के नज़ारों से मैं कह रहा हूँ,
गगन के सितारों से मैं कहा रहा हूँ,
मुझे मेरा महबूब वापस लौटा दो,
मुझे मेरी चाहत से अब तो मिला दो
मेरे ख्वाब में..............................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है मुझको यकीं ख्वाब सच होंगें मेरे,
मेरे हिस्से आयेंगे उजले सवेरे,
महज ख्वाब की वो परी न रहेगी,
वो बतियायेगी मुझ से हँस के कहेगी

मेरा प्यार हो तुम
तेरा प्यार हूँ मैं।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसा ये बंधन है

⊙

कैसा ये बंधन है इसको कैसी प्रीत लिखूँ,
जी करता है तेरे आँचल पर कोई गीत लिखूँ।

तुमको देखे बिन मेरे इस दिल को चैन नहीं मिलता,
मेरे मन के गुलशन में तुम बिन इक फूल नहीं खिलता
तुमको मस्त बहार लिखूँ या गुल का मीत लिखूँ,
कैसा ये बंधन है.....................................।

मैंने अपने दिल को तेरी यादों से बहलाया है,
मैं क्या जानूँ तेरे दिल में आकर कौन समाया है,
अनजाने मैं सजनी कैसे प्रीत का गीत लिखूँ
कैसा ये बंधन है.....................................।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिल में है तस्वीर तुम्हारी रोज़ निहारा करता हूँ,
अपनी पलकों पे तेरे ही ख्वाब संवारा करता हूँ
लफ्ज़ों में तुम ही ढलते हो मैं जब गीत लिखूँ।
कैसा ये बंधन है.......................................।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्यार की बगिया

⊙

हम तुम दोनों संग रहें और साथ हमारा प्यार रहे
अपने प्यार की बगिया में मुस्काती मस्त बहार रहे

दिल के सब सपने सच हो यहाँ इक प्यार का ऐसा गुलशन हो,
फूलों की तरह महके हर दिन हर रात यहाँ इक दुल्हन हो,
फूलों में जैसे खुश्बू हैं ऐसे मन में प्यार रहे।
हम तुम दोनों संग..।

इन मस्त हवाओं के संग संग मेरा जियरा उड़ता जाये रे,
ये प्यार न् पागल कर दे मुझे कोई तो मुझे समझाये रे,
प्यार में ऐसे डूबे जैसे बगिया में गुलज़ार रहे।
हम तुम दोनों संग ....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्यार के सागर में दिल की किश्ती को चलो डुबो दें हम,
अपने इन प्यासे अरमानों को क्यों न अभी भिगो दें हम,
प्यार किया तो फिर क्यों सोचें जीत रहे या हार रहे।
हम तुम दोनों संग.....................................।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युवाशक्ति

⊙

युवाशक्ति ही सर्वशक्ति है इससे बड़ी कोई शक्ति नहीं।
युवा अगर हो जायें जागरूक तो कोई बात बिगड़ती नहीं।

देश की खातिर अब तक हम सर्वस्व लुटाते आए हैं।
देश की नैया को हम तूफानों से बचाते आए हैं।
रस्ते में दीवार बने जो ऐसी कोई हस्ती नहीं।

उच्च हिमालय के शिखरों से ऊँचे इरादे अपने हैं।
चाँद सितारों से भी उजले–उजले अपने सपने हैं।
ठान लें अपने मन में जो भी बात बदल वो सकती नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश पर आने वाली हम हर विपदा मिलकर झेलेंगें।
काम कठिन हो चाहे जितना खेल समझकर खेलेंगे।
प्रलय मचाती आँधी भी अपने आगे टिक सकती नहीं।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्बोधन

⊙

चेहरा तेज़ धूप की तरह
स्वभाव शांत पोखर सा
आवाज़ मानो सुर में साज
अधर गुलाब की दो पंखुड़ियाँ
आँखें गहरा सागर
सचमुच तुम अति सुंदर लगते हो
स्मरण शक्ति तुम्हारी
सदाबहार हो तो।
स्मृति पुस्तक में,
अंकित हो शब्द।
तो याद करो,
कुछ याद आया।
कभी कभी
कुछ पल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमसे दूर होने पर
आँखों से टपक पड़ते थे आँसू
तुम्हारे शब्दों में
ज्वार भाटा आता था
और तुम खिँचे चले आते थे
उसके बाद तुम्हारे न आने पर
फिर न जाने क्यों हो गई साँझ
मुरझा गया गुलाब
सागर शांत हो गया
और पोखर में आ गया तूफान
और अब तुम्हारी स्मरण शक्ति में
उभरती है झलक
पतझड़ की।
ज़रा भूल से आकर देखो
तो सही
कितना सच
कितना झूठ था
तुम्हारा सम्बोधन
'तुम अति सुंदर लगते हो'

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेनाम

⊙

बेनाम सफर,
बेनाम मंजिल
बेनाम ज़िंदगी जीते जीते
आज पहली बार
कोई मिला।
जिसने बेनाम को भले ही
न दिया कोई नाम
न चला साथ दो कदम,
न दिया साथ इस जिंदगी का
पर
यह कहकर किया बोझा कम
इस बेनाम मन का,
इस अकेले मन का,
कि वो भी बेनाम है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज शायद दो बेनाम मिल बैठेंगें
उस बेनाम के दिल में
झाँककर देखा
लगा बेनाम को नाम मिल गया
डरता हूँ बेनाम भी न रहूँ
नाम भी न रहे
तो कैसे कटेगी जिंदगी
नाम और बेनाम के बीच।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहकहा

⊙

हर वर्ष तीन बुराइयों का अंत,
हर्षोल्लास के साथ,
जीत बुराई पर,
अनियंत्रित भीड़,
अनगिनत सर,
और घिरे हुए देखता हूँ तीन पुतलों को,
आश्चर्य होता है
तीन पुतलों को बांधा है
और चारों तरफ पहरेदारों की फौज,
अग्नि जलती है
और पटाखों के चलने की आवाज़
लगती है इक व्यंग्य, अट्टहास,
एक कहकहा पुतलों का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो कह रहे हो मानों
जलां दो बेशक
जीते फिर भी हम ही हैं
तुम तीनों को जला कर खुश हो हर वर्ष
और हम एक दिन में अनगिनत।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लावा

⊙

खामोश तुम
खामोश मैं
खामोश मानवता !
शोर है तो बस
एक
पशुता की आदमखोर खूनी नदी का
जो इस धरा में रिस रिस कर
बन चुकी है लावा।
फूट पड़ता जो कभी–कभी
और जला देता है कितने घर, लोग।
न जाने यह लावा उजाड़ेगा कितने गुलशन।
सोचता हूँ चलता रहा यह क्रम
तो निगल लेगा एक दिन
यह पूरी मानव जाति।

❑ ❑ ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

... College Of Education Bantalab Jammu

नाम	:	सुनील शर्मा
जन्म	:	31 जनवरी, 1965
पिता जी का नाम	:	श्री राम लाल शर्मा
माता जी का नाम	:	श्रीमती ललिता शर्मा
शिक्षा / पेशा	:	सिविल इन्जीनियरिंग / असिस्टैंट इंजीनियर
जन्म स्थान	:	जम्मू
प्रकाशन	:	1. प्रेम पवन की पहली थपकी (हिन्दी कविता संग्रह) 2. मेरियां संञां तेरी र्होल (डोगरी कविता संग्रैह) 3. **Dhiru Bhai Ambani (An Angel on Earth) English Poetry** अनेक लेख, कविताएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित